A3

A4

A5

हिन्दी साहित्य 27/07/2023

HL-2306

drishti

Drishti Mentorship Program Mains-2023

ANSWER BOOKLET

Time allowed: 3 Hours

Maximum Marks: 250

Name: Pritesh Singh Rajput

Medium: Hindi

Centre: MN 27/07/2023

UPSC Roll No.: 7708511

Mobile Number:

Subject:

Date:

Email:

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

All the questions are compulsory.

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Answer Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Answer Booklet must be clearly struck off.

(To be filled by Evaluator only)

Question Number	Marks	Question Number	Marks
1.		11.	
2.		12.	
3.		13.	
4.		14.	
5.		15.	
6.		16.	
7.		17.	
8.		18.	
9.		19.	
10.		20.	
Grand Total			

Evaluator (Signature)

Reviewer (Signature)

drishti | दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

1 (क) 1.

दिनकर महावीर प्रसाद जी के प्रोत्साहन से हिंदू समाज में उपेक्षित महिलाओं पर रचना लिखना प्रारंभ किये जिसमें पुरर्वा - उर्वशी कथा के उर्वशी पर भी कविता लिखे।

दिनकर जी द्वारा नारी की महिमा का सूक्ष्म विश्लेषण कर समाज में उनकी स्थिति को उभारे। इस रचना में पुरर्वा के द्वारा किसी अन्य महिला से प्रेम करने के बाद भी उर्वशी अपनी धैर्यता व एकनिष्ठता बनाए रखती है।

दिनकर जी ने उर्वशी की नारीत्व को प्रस्तुत कर उनको त्याग, तप को उजागर किये।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उनकी कविता में भाषा सरल व सहज है, तत्समीपन का भाव भी है किंतु छोटे-छोटे पंक्तियों से कविता की गेयता बनी रहती है।

नारीवादी चरित्रों में दिनकर जी ने उर्वशी को शीर्ष में खड़ा भी कर दिये हैं।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) इप्टा (IPTA) अर्थात इंडियन पीपुल्स थियेटर एसोसिएशन। इसकी स्थापना वर्ष 1943 में हुआ था।

अपने स्थापना के बाद से ही विभिन्न नाटकों का मंचन किया जा रहा है जिसमें 'अंधायुग', 'आषाढ़ का एक दिन' 'भारत-दुर्दशा' प्रमुख रहा है। इप्टा के माध्यम से ही भारत में नाटक व रंगमंच की परम्परा को एक नई दिशा प्रदान किया गया।

पारसी थियेटर से इतर इप्टा में सामान्य व सरल रंगमंच सज्जा किया जाता था। अभिनेता अपने कौशल से नाटकों को मंचित करता था जिससे नाटक जीवंत लगने लगता था।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

इसके द्वारा आज भी रंगमंच को बल प्रदान किया जा रहा है किंतु फ़िल्मी दुनिया से कड़ा संघर्ष करना पड़ रहा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(अ) किसी विषय पर बुद्धि व भावनाओं के माध्यम से चिंतन, मनन व स्मरण कर लेखनी संस्मरण कहलाता है।

संस्मरण के लेखन में शांतिकुमार जैन तथा महादेवी वर्मा का नाम प्रमुखता से लिया जाता है।

महादेवी वर्मा जी द्वारा रचित संस्मरण 'स्मृति की रेखाएँ' अपनी विशिष्ट भावना प्रवाह शैली और प्रस्तुतीकरण करण के लिये विख्यात है। 'स्मृति की रेखाएँ' में रेखाचित्र का लक्षण भी दिखाई देता है जिससे इसे कुछ आलोचक रेखाचित्र भी कहते हैं तो कुछ संस्मरणात्मक रेखाचित्र और तो कोई रेखाचित्रात्मक संस्मरण की संज्ञा देते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

'स्मृति की रेखाएँ' की भाषा सरल, सटीक और पाठक के मन को मोहन करने वाली है। अपनी भावनाओं को दर्शाने कहीं-कहीं प्रतीक व बिंबों का भी कुशल प्रयोग की गई है।

संस्मरण की दुनिया में महादेवी वर्मा जी का 'स्मृति की रेखाएँ' 'मील का पत्थर' है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(घ)4. संस्मरण हिन्दी की एक नई विधा है जिसमें किसी घटना, वस्तु, व्यक्ति को आधार बनाकर रचनाकार द्वारा चिंतन-मनन से रचना किया जाता है।

संस्मरण के इतिहास में कांतिकुमार जैन एक जाना-पहचाना नाम है जिन्होंने संस्मरण को फर्श से अर्श तक ले जाने में महती भूमिका निभाई गई है। उनके द्वारा अनेक संस्मरण का लेखन किया गया जो आज भी संस्मरण लेखकों के लिये मुख्य आधार का काम करता है।

उनके संस्मरण में भावनाओं पर आधारित विषयों पर गहन विश्लेषण व व्यक्तियों का सूक्ष्म विशेषताओं का समावेशन रचना बड़ी विशेषता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

संस्मरण में भाषा कथ्य के अनुरूप उपयोग किये हैं। जहाँ देशी शब्द की आवश्यकता है वहाँ देशी शब्द जहाँ तत्समी की जरूरत है वहाँ तत्समी शब्द।

क्रांतिकुमार जैन जी का संस्मरण आज भी हमें संस्मरण लेखन हेतु प्रेरित करते हैं।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

5\. अज्ञेय ने अपनी कहानियाँ 'तार सप्तक' के माध्यम से प्रस्तुत किये हैं। इनकी कहानियों का शिल्प है –

1. कथानक में बिखराव रहता है।
2. कहानियों के परम्परागत विशेषता जिसमें प्रारंभ, चरम और अंत होता है, का अभाव है।
3. अंत कोई उद्देश्य या उपदेश के साथ समाप्त नहीं होता।
4. मनोविश्लेषणवादी होने से स्वत: ही कहानियों में प्रतीकात्मकता और बिंबात्मकता का प्रयोग बढ़ आता है।
5. भाषा सरल, सहज तथा स्वच्छता लिये हुए है।
6. मुहावरों व लोकोक्तियों का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया गया है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

फ्रायड सिग्मंड फ्रॉयड और

... से प्रभावित थे जिससे व्यक्ति की मन का विश्लेषण और व्यक्ति की अस्तित्व को बनाए रखने के बिम्बों का प्रयोग किया गया है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

2(क)

हिन्दी काल विभाजन में जिस साहित्य के काल को 'स्वर्णकाल' कहा जाता है वह 'भक्तिकाल' ही है। 'स्वर्णकाल' कहने के पीछे इस काल की समग्रता, चेतनावाद, समाज कल्याण की भावना, भाषा की अभिव्यक्ति तथा लोकजागरण है।

भक्तिकाल को लोकजागरण का काल कहना कितना उचित →

① साांस्कृतिक समन्वय – हिंदू व मुस्लिम में विभाजन, सगुण-अगुण में विभाजन से सांस्कृतिक पक्ष कमजोर हो गया था जिसे इस काल के कवियों द्वारा एक किया गया। जैसे सगुण-अगुण के संबंध में तुलसीदास जी के विचार है –

"अगुनहिं सगुनहिं नहिं कछु भेदा।"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti दृष्टि The Vision

④ बाह्य आडंबर पर चोट — मूर्ति पूजा, नमाज पढ़ने इत्यादि पर कटाक्ष किया गया। जैसे कबीर की पंक्तियों में है—

"पाहन पुजे हरि मिले, मैं पुजूँ पहार,
ताते तो चाकि भली, पिस संसार खाय।"

③ गुरु की महिमा का गुणगान — समाज में गुरु को विशिष्ट स्थान दिलाने व उसका सम्मान बढ़ाने प्रयास किया गया।

"गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पांव
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताए।"

④ हिंदू-मुस्लिम एकता —
लोगों को समता के साथ रहना हिन्दु-मुसलमान एकता बढ़ाकर हिंदुस्तान को बढ़ाने व ईश्वर की सच्ची भक्ति हेतु प्रेरित किया गया है।
उदा. —

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti दृष्टि The Vision

7.

"हिंदू कहे राम हमारा, मुस्लिम रहमाना।
दोनों लड़े लड़े मरुउ, मर्म कोई न जाना।।"

⑤ आम जनता को अपने साहित्य से जोड़ने आम बोलचाल की भाषा का उपयोग किया गया जिसमें ब्रज और अवधी प्रमुख है।

⑥ समाज के सुभेद्य वर्ग की गरीबी, बेरोजगारी तथा संकट का भी उल्लेख किया गया है।

⑦ समाज में शांति व सौहार्द लाने तथा राज्य को कैसे होने चाहिये इसका भी वर्णन किया गया है —

"दैहिक, दैविक, भौतिक ताप!,
राम राज्य काहुं नहिं व्यापा।"

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इस काल के रचनाओं में कहीं -कहीं महिलाओं को परम्परागत दृष्टिकोण से देखा गया है -

'ढोल, शुद्र, गँवार, पशु, नारि, सब ताड़ना के अधिकारी"

इसको लेकर आलोचना किया जाता है किंतु यह कथन महिलाओं के प्रति राक्षसों व अनैतिक व्यक्तियों द्वारा कहा गया है यह रचनाकार के विचार नहीं है।

अतः भक्तिकाल को लोकजागरण का काल कहा सार्थक प्रतीत होता है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

2(अ)

'पृथ्वीराजरासो' आदिकाल के प्रसिद्ध रचना है जिसके रचयिता चंदबरदाई हैं। पृथ्वीराजरासो की विशिष्टता तथा संवेदना तथा शिल्प के आधार पर इसे 'महाकाव्य' की संज्ञा दी जाती है। किंतु इस संबंध में विवाद है।

महाकाव्य है?

1. इसका नायक महापुरुष है, यदि विलासिता के पक्ष को छोड़ दें तो ~~संयुक्त~~ पृथ्वीराज महानता की श्रेणी में आ जाते हैं।
2. नायक नैतिक है वह अधर्म करने वाले मंत्री को भी माफ नहीं करते हैं।
3. महाकाव्य में 8 सर्ग से अधिक होने चाहिये, यदि पृथ्वीराजरासो पर विचार करें तो सर्गों का विभाजन नहीं है किंतु अध्यायों के आधार पर यह 8 सर्ग से अधिक ही है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

④ महाकाव्य में छंदों की बहुलता होती है, इस मामले में तो किसी अन्य रचना से तुलना में 'पृथ्वीराजरासो' की कोई सानी नहीं है, इसमें 68 प्रकार के छंद विद्यमान है।

⑤ रस प्रधानता में पूरा रासो वीर रस से पूर्ण है कहीं-कहीं श्रृंगार रस लक्ष्य भी मिलता है।

⑥ महाकाव्य को समाज के कल्याण पर आधारित होना चाहिये, इस मामले में 'पृथ्वीराजरासो' में कमजोरी दिखती है क्योंकि यह राजाओं के गुणगान पर आधारित है।

महाकाव्य नहीं?

① पृथ्वीराज जो स्त्री को देखकर ही युद्ध के लिये आतुर हो जाता है, भद्रपुरुष नहीं हो सकता।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

9.

② वीरता का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया गया है। जैसे अंत में पृथ्वीराज द्वारा आँख न होने पर भी महमूद गजनवी को मार देना।

"चार बाँस चौबीस गज, अष्ट अंगुल प्रमाण,
ता ऊपर सुल्तान बैठे, मत चूके चौहान।"

③ ऐतिहासिक दृष्टि से इसके तथ्य अप्रामाणिक है। जैसे सुल्तान की मृत्यु इतिहास में गोखरों द्वारा मिलता है।

इस मतभेद से यह स्पष्ट है कि 'पृथ्वीराजरासो' भले ही महाकाव्यत्व की प्रहाते में न आता हो किंतु इसे दुर्लभ श्रेणी के 'महाकाव्य' माना जा सकता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

21(ग)) साहित्येतिहास लेखन में शिवसिंह द्वारा भी योगदान दिया गया है. उनके द्वारा 'शिवसिंह सरोज' नामक हिन्दी साहित्य इतिहास ग्रंथ की रचना किया गया है।

सीमाएँ

1. कालों का विभाजन वैज्ञानिक विधि द्वारा नहीं किया गया है।
2. काल को निर्विशेष या अधिकता पर आधारित करना ठीक है किंतु व्याप्ति विशेष सही नहीं है।
3. रचनाकारों के दिये गये कालों में मतभेद की स्थिति है।
4. रचनाकारों को उनके योग्य काल में रखा नहीं गया है।
5. इनके द्वारा किया गया नामकरण वर्तमान में मान्य नहीं है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

~~10.~~

महत्व

1. काल विभाजन का प्रयास किया गया जो पं. रामचंद्र शुक्ल और द्विवेदी के लिये एक आधार के रूप में कार्य किया।
2. 'शिवसिंह सरोज' में अनेक रचनाकारों व रचनाओं की जानकारी मिलती है जिनका इतिहास में नाम लुप्त होने के कगार पर थे।
3. हिन्दीसाहित्येतिहास में पहली बार सूक्ष्म विश्लेषण द्वारा काल विभाजन का प्रयास किया गया।

शिवसिंह द्वारा साहित्य के इतिहास लेखन में भले ही कमियाँ हो किंतु उनके समक्ष जो तथ्य एवं

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

पुस्तकें विद्यमान थी उस आधार पर ~~मिलसा~~ 'शिवसिंह सरोज' को अपनी महत्वपूर्ण योगदान है जिसे भुलाया नहीं जा सकता।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

5(ख)

नई कहानी का विकास प्रगतीवाद एवं प्रयोगवाद के विरोध में 1960 ई के दशक में (1951 से) हुआ था।

सीमाएँ

① नई कहानी 'भोगे हुए यथार्थ' पर लिखा जाता था किंतु समय के साथ मौलिकता समाप्त हो गई और इसके रचनाकार भी 'खींचे हुए यथार्थ' में रचना लिखने लगे।

② व्यक्ति को इतना ज्यादा महत्व दिये कि समाज इनकी रचनाओं से पूर्णत: अछुता रहा।

③ यौन कुंठाओं को जबरजस्ती ठूंसा गया प्रतीत होता है।

④ नई कहानी को पढ़कर ऐसा लगता है कि मानव की सबसे बड़ी समस्या यौन इच्छाएँ हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(5) प्रतीकों व बिंबों का अधिक प्रयोग से रचना समझ से परे लगते हैं, आम जनता को समझ पाना दुरूह लगता है।

(6) नई कहानियों में समस्याओं को केवल उठाया गया है उसका समाधान का प्रयास नहीं किया गया।

(7) अधिकतर रचनाएँ मध्यम वर्ग आधारित है।

किंतु नई कहानी प्रगतीवाद और प्रयोगवाद के जाल को तोड़कर कहानी को आदमी / व्यक्ति केन्द्रित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

8(ख)

रामधारी सिंह 'दिनकर' राष्ट्रीय सांस्कृतिक पक्षों पर ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को लेकर रचना करने वाले रचनाकार हैं।

दिनकर जी की कविता में राष्ट्रवाद और नवजागरण की उपस्थिति अत्यधिक मात्रा में है जो व्यक्ति को ओजस्व से भर देता है। कविताओं पढ़ कर तथा सुनकर रोम-रोम फड़कने लगता है। ओजगुण का इतना संचार होता है कि अभी दुश्मन को पराजित कर स्वतंत्रता प्राप्त कर लिया जाए।

दिनकर जी द्वारा तत्समो व वीरता भरे शब्दों का प्रयोग बहुलता में किया गया है जिससे भाषा में कठिनाई आने की संभावना रहती है किंतु अपनी कसावट और छोटे-छोटे कविताओं से कविता को गेयता व लयबद्ध बनाना कोई

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

12. दिनकर जी से सीखे।

स्वतंत्रता आंदोलन के समय आम जनता का नवजागरण करने तथा राष्ट्र भावना भरने 'दिनकर' जी के कविताओं का प्रभावी भूमिका रहा।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

5(ग)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

13.

6(घ) विद्यापति रीतिकालीन कवि हैं जिन्होंने राधा और कृष्ण के सौन्दर्य का अद्भुत वर्णन किया है।

कृष्ण के प्रति सौन्दर्य चेतना

विद्यापति जी द्वारा कृष्ण की सौन्दर्य को सुंदरतम बताया गया है जिसे देखकर राधा द्वारा एक ही झलक में प्रेम में बंध गई। राधा कहती है कि जिंदगी भर कृष्ण को देखकर भी मन नहीं भरेगा।

कृष्ण के संयोग श्रृंगार के साथ ही वियोग को भी दिखाया है जिसमें कृष्ण मथुरा जाने पर राधा के विरह में रहता है।

राधा का सौन्दर्य

राधा को विश्व की सुंदरतम युवती के रूप में प्रस्तुत किया है। राधा जहाँ-जहाँ

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

पग धरती है वहाँ-वहाँ कमल खिल जाते हैं तथा जहाँ-जहाँ अंग झलकता है विद्युत उत्पन्न हो जाती है।

कृष्ण के बराबर स्थान राधा को भी दिया गया है किंतु कभी-कभी राधा कृष्ण से भी आगे निकल जाती है। राधा के प्रेम में एकनिष्ठता झलकता है, अन्य गोपियों द्वारा कृष्ण से प्रेम करने पर भी जलन भाव शून्य है।

इस प्रकार विद्यापति जी द्वारा राधा व कृष्ण के सौन्दर्य चेतना का वर्णन किया गया जो सूरदास, मीरा, जायसी के लिये एक नई दिशा सृजित किया।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

5 (J)

हिंदी रंगमंच जब अपनी जमीन तलाश रही थी तथा 1960 के दशक में भारत सरकार द्वारा 'राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय' का स्थापना किया गया।

योगदान

1. हिंदी रंगमंच को जीवनदान प्रदान किया, यह पतन से रंगमंच को बचाया।
2. कठिन-से-कठिन नाटकों का मंचन सरल व सहज किया।
3. अनेक अभिनेता रंगमंच के मंचन के लिये तैयार हुए।
4. भारत में फारसी रंगमंच के साथ संघर्ष में हिंदी रंगमंच को मैदान में बनाए रखा।
5. वर्तमान में फिल्मी दुनिया में अनेक सितारे हैं जो 'राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय'

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

14. के दो बीज है।

उदा.- मनोज बाजपेयी, पंकज त्रिपाठी।

⑥ इसके द्वारा कठिन माने जाने वाले जयशंकर प्रसाद जी के नाट्यों का भी तकनीकों का प्रयोग कर मंचित किया गया।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय

अपनी स्थापना से लेकर आज तक अनेक नाट्यों को मंचित किया है जिससे आज तक हिंदी रंगमंच फूल-फूल रहा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

6(क) समानांतर हिन्दी कहानी आंदोलन सन् 1980 के अंतिम दशकों में उभरा और 1980 के बाद पूर्ण रूप में अस्तित्व में आ गया।

समानांतर हिन्दी कहानी आंदोलन

हिन्दी कहानी में आई गिरावट को उठाने के लिये लाया गया था। पूर्व में प्रचलित प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कहानी ~~अकहा~~. अकहानी ~~प्रवृत्तियाँ~~ से समाज के सभी वर्गों की ~~सहभागिता~~ समाप्त हो गई थी। नई कहानी में मध्यम वर्ग तो प्रगतिवाद में मजदूर-अमीर संघर्ष केन्द्र में था। आम आदमी साहित्य से कटता जा रहा था।

इन सब कारणों को देखते हुए समानांतर कहानी ~~अस्तित्व~~ अस्तित्व में आई।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

'समानांतर कहानी' आंदोलन का अवदान

① हिन्दी कहानी को मनोविश्लेषण के भँवर से बाहर निकाला।

② समाज के यथार्थ के साथ साहित्य को स्थापित किया।

③ समाज में उपेक्षित वर्गों के शोषण को साहित्य के माध्यम से लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया।

④ जो कहानी साहित्य व्यक्ति केन्द्रित हो गया था उसे बाहर निकाल लोककल्याणकारी स्वरूप को पुनः जगाया।

⑤ इन कहानियों में समाज में व्याप्त गरीबी, बेरोजगारी, संघर्ष, भुखमरी को आधार बनाया गया।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

15.

⑥ 'समानांतर कहानी' आंदोलन ने नारी मुक्ति, नारी सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया।

⑦ इस आंदोलन से नये पीढ़ी के कहानीकार उपजे जो कहानी के भविष्य को आगे बढ़ाने का कार्य अभी भी कर रहे हैं।

किंतु इस कहानी आंदोलन के अत्यधिक खुलापन में कहानियों में अश्लीलता तथा गालियों का समावेशन में न चाहकर भी योगदान दिया।

फिर भी हिन्दी कहानी को एक नई दिशा प्रदान करने में 'समानांतर कहानी' आंदोलन का योगदान अविस्मरणीय रहेगा।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

6(ख)

हिन्दी नाटक के शीर्षस्थ नाटककार जयशंकर प्रसाद जी द्वारा चंद्रगुप्त का रचना किया गया है। यह नाटक ऐतिहासिकता का स्वरूप लिये वर्तमान भावनाओं व विचारों तथा परिस्थिति की ऐसी कहानी नाटक के माध्यम से बयां करती है।

सामान्यत: 'चन्द्रगुप्त' को रंग-मंचीयता के दृष्टि से रंगमंच के अनुरूप नहीं माना जाता है।

कारण —

1. अत्यधिक खण्डों में विभाजित होना, जिससे बार-बार परदे बदलना पड़ता है।
2. कथानक एकदम अटोल है।
3. संवाद लम्बे-लम्बे है जिससे रस बन नहीं पाता।
4. ध्वनि व प्रकाश संकेत कम है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

किंतु बाद के रंगमंचों के निर्देशकों द्वारा जयशंकर प्रसाद जी के इस नाटक का मर्म समझे तथा इसे मंचित करने लगे।

मंचन हेतु प्रयास

1. नवीन तकनीकों का प्रयोग करना।
2. रंगमंच का आकार बड़ा करना।
3. संवादों को थोड़ा छोटा करना लेकिन यह ध्यान में रखे रहना की नाटक की भाव समाप्त न हो।
4. कौशल पूर्ण एवं रुचि रखने वाले कलाकारों को अभिनय के लिये चयन करना।
5. जनता / दर्शक तक उद्देश्य को पहुँचाने तथा मनोरंजक बनाने आवश्यकतानुसार रंग, प्रकाश, ध्वनि संकेतों को विनियोजित करना।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

16.

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

जयशंकर प्रसाद जी मानते हैं कि नाटक के अनुसार रंगमंच होना चाहिये और इसी लक्ष्य को लेकर आधुनिक रंगमंच द्वारा सरलता से 'चंद्रगुप्त' का मंचन किया जा रहा है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

6(ग) भक्तिकाल में कृष्णभक्ति काव्यधारा के स्थापना में वल्लभाचार्य का तथा उनके पुत्र विट्ठलनाथ का योगदान अभूतपूर्व है।

वल्लभाचार्य एवं विट्ठलनाथ का अवदान

① वल्लभाचार्य द्वारा पुष्टिमार्ग एवं शुद्धाद्वैतवाद की स्थापना किया गया। कृष्णकाव्यधारा शुद्धाद्वैतवाद पर ही आधारित है।

② वल्लभाचार्य द्वारा सूरदास जी को जो पहले राम भक्त कवि थे, आगे फिर कृष्ण की भक्ति की ओर उन्मुख किये।

"सूरदास - हमारो कौन गति ब्रजनाथ'
वल्लभाचार्य - सूर होय के काहे घिघयात हो"

③ शुद्धाद्वैतवाद के माध्यम से शंकर के अद्वैतवाद का खण्डन कर कृष्ण के प्रति प्रेम का विश्वास जगाया।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

④ वल्लभाचार्य के मृत्यु के बाद विट्ठलनाथ द्वारा श्रीनाथ मंदिर की सेवा करने 'अष्टछाप' की स्थापना किया गया।

⑤ 'अष्टछाप' मे 4 शिष्य वल्लभाचार्य एवं 4 शिष्य ~~शिष्य~~ विट्ठलनाथ के थे।
वल्लभाचार्य के शिष्य - ① सूरदास ② परमानंददास
विट्ठलनाथ के शिष्य ① चतुर्भुज दास ③ नंददास
② क्षीरसागर
प्रमुख हैं।

⑥ ~~व~~ वल्लभाचार्य द्वारा सूरदास जी को 'पुष्टिमार्ग का जहाज' कहा गया।

⑦ 'अष्टछाप' के द्वारा आठों पहर श्री कृष्ण के प्रेम में भजन - कीर्तन में लीन लगे रहते थे।

⑧ हिन्दी साहित्य को कृष्णकाव्य धारा के अंतर्गत अनेक ग्रंथ प्राप्त हुए।
जैसे - सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

17.

⑨ ब्रजभाषा को साहित्य की भाषा के रूप में स्थापना में 'अष्टछाप' का महत्वपूर्ण योगदान।

~~वल्लभाचार्य व~~

~~व~~ वल्लभाचार्य व विट्ठलनाथ के शिष्यों द्वारा हिन्दी साहित्य में जो योगदान दिये वह अमर है किंतु इनकी रचनाएँ लोक जीवन से दूर तथा जनता का जो साहित्य से रचित होते हैं कि उपेक्षा की गई।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

7(ड)

हिन्दी साहित्येतिहास लेखन में आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी द्वारा प्रथम बार वैज्ञानिक विधियों द्वारा स्पष्ट, परिपक्व इतिहास बोध के साथ इतिहास का लेखन किया गया।

किंतु इनकी इतिहास लेखन में कुछ सीमाएँ हैं —

① आदिकाल या वीरगाथा काल का नामकरण —

शुक्ल जी रासो ग्रन्थों में उपस्थित वीरता भरे गीतों को देखकर इसका नाम वीरगाथा कहे।

किंतु द्विवेदी जी द्वारा इसका खण्डन कर कहा गया कि वीरता भी एक अंश है सम्पूर्णता नहीं, यह हिन्दी साहित्य इतिहास की प्राचीन ~~काल~~ है जिसे 'आदिकाल' कहना उचित होगा।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

② सिद्ध व नाथ तथा बौद्धों, जैनों के साहित्य को साम्प्रदायिक व धार्मिक ग्रंथ मानकर हिन्दी साहित्य से निकाल दिये।

द्विवेदी जी ने ~~इस~~ इसका खण्डन कर कहे कि इस हिसाब से पूरा भक्ति काल हिन्दी साहित्य से बाहर होगा)

③ कबीर दास जी के अस्पृश्यता को वैष्णवी एकेश्वरवाद मानना।

जबकि यह नाथ परम्परा के अस्पृश्यता का परिवर्तित रूप है।

④ छायावाद के प्रतीकात्मकता तथा रहस्यवाद को जमकर आलोचना कर लताड़े।

शुक्ल जी छायावाद के रहस्य को सही से बूझ नहीं पाये।

⑤ केशवदास को उचित स्थान न देना।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Q8. (b) अपने समकालीन रचनाओं को महत्व नहीं दे पाये।

जबकि इस समय तक प्रेमचंद द्वारा अपने कालजयी रचना 'गोदान' का लेखन कर चुके थे।

इन सीमाओं के बाद भी आ. शुक्ल जी द्वारा किया गया काल विभाजन में 4 कालों में से 3 काल भक्तिकाल, रीतिकाल तथा आधुनिक काल का नाम आज भी निर्विवाद रूप से मान्य है। शुक्ल जी के सीमाओं की एक कारण उस समय तक तथ्यों की जानकारी न होना हो सकता है जो आज प्राप्त है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

7(ख) 'आधे-अधूरे' नाटक मोहन राकेश द्वारा लिखा गया है। मोहन राकेश अपने पूर्ववर्ती नाटककार, भारतेंदु तथा जयशंकर प्रसाद से इतर रंगमंच के मंचन हेतु रंगमंचीयता को ध्यान में रखकर नाटक लिखते थे।

'आधे-अधूरे' नाटक स्वतंत्रता पश्चात् आजादी से मोहभंग होने की स्थिति पर व्यक्ति के चिंतन व मनन में जो परिवर्तन आता है तथा शहरों में औद्योगिकीकरण पश्चात् अकेलापन, अजनबीपन, आत्मनिर्वासन बोध की भावना पर आधारित है।

महिलाओं की होती सशक्तिकरण तथा अपने अधिकारों को जानकर महिलाएँ स्वतंत्रता की मांग करने लगे जिससे रिश्तों में टूटन आने लगा। समाज में पति-पत्नि के संबंधों में बड़ा परिवर्तन आया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इसी तरह आधे-अधूरे में भी नायक महेन्द्र तथा नायिका के मध्य संबंधों में दूटन आया। वे एक-दूसरे के साथ रहने में मजबूरी समझते थे। नायक परम्परागत विचारधारा वाला था तो नायिका को चिड़िया की तरह स्वतंत्र आसमान में उड़ना था।

पति-पत्नियों के मध्य दरार आने से परिवार व बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ता है इस नाटक में बखूबी दिखाया गया है।

नायिका जहाँ अपनी यौन इच्छाओं की पूर्ति के लिये अलग-अलग पुरुषों के साथ समय व्यतीत करती है किंतु सबको ही अधूरा ~~पा~~ होने का अनुभव करती है और अंततः नायक के साथ ही जीवन व्यतीत करने आ जाती है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

12. मोहन राकेश द्वारा इस नाटक में किसी एक व्यक्ति का आधुरापन नहीं बल्कि सभी व्यक्ति के अधूरेपन को समाज के समक्ष उभारते हैं।

'आधे-अधूरे' नाटक अपने भावनाओं के ~~अध~~ को स्तर पर अन्य सभी नाटकों में अग्रणी है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

1 (ग) उपन्यास विधा अपने आप में एक समुद्र के समान है जिसमें अनेक अन्य धाराओं का समावेशन है। इसमे आदर्शवादी उपन्यास, अर्थात यथार्थवादी उपन्यास तथा आंचलिक उपन्यास धारा महत्वपूर्ण है

आंचलिक उपन्यास धारा को फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा रचित 'मैला आँचल' के द्वारा पूर्णता मिली।

आंचलिक उपन्यासों में अंचल ही नायक होता है। पात्रों की संख्या अत्यधिक होती है। देशज शब्दों का भरमार होता है। अंचल की स्थिति का पूर्ण विवरण किया जाता है जिससे पाठक खुद को अंचल में ही पाता है।

इन उपन्यासों में अंचल की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक पक्षों का सूक्ष्मता से वर्णन किया जाता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

आंचलिक उपन्यासों की शिखर बिंदु फणीश्वरनाथ रेणु जी का 'मैला आँचल' है। यह रचना अंचल की समग्रता लिये पाठक के समक्ष उपस्थित होता है।

रेणु जी द्वारा 'परती परिकथा' नामक आँचलिक उपन्यास भी लिखा गया है।

आंचलिक उपन्यास में बढ़ती शहरीकरण के विपरीत ग्रामों का वर्णन कर भारत के ग्रामीण परिवेश को उकेरा जाता है। यह हिन्दी साहित्य को ग्रामों तक पहुँचाने का एक सशक्त माध्यम है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

20.

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation